दर-दर भीखन की नऊबत आई अऊर तैं मोही दुष्ट कहती है रे... नीच हूं? मर जा, जिए के अधिकार तोही नई है। भूत चढ़ा है मोरे ऊपर... स्साले मार डाऊं जान...''

अंततः भूख, गरीबी और बीमारी से रामा की अम्मां मर जाती है। और कहानी की आख़िरी पंक्ति आपके सीने में तीर की तरह गड़ी रह जाती है, ''एक टुकड़े ज़िन्दगी के कई टुकड़े हो गए थे।''

ज़िन्दगी आख़िर क्यों टुकड़े-टुकड़े हो जाती है? जीने की मामूली आशाएं भी क्यों पूरी नहीं होती और क्यों सपने का कोई मोल नहीं होता? ज़िन्दगी रद्दी की टोकरी में क्यों फटे हुए कागज़ों की तरह समा जाती है? इन प्रश्नों के कारण और जवाब भी इन्हीं कहानियों में मिलते हैं। 'असमाप्त' कहानी का दद्दा चाय की दुकान में बुद्धिजीवियों की हस्बमामूल बहसें सुनता हुआ अपनी ही सोच में ही व्यंग्य करता है कि, ''अभी तो बस देस को चोर नेता खाय जा रहे हैं... जइसे इन्हींन को देस का जादा फिकिर है। रोजाना ओही बात... उबते भी नई हैं। गरीबन-हरीजन के साथ अनियाय होये जा रहा है तो कुछु बोलो सरकार से। गांड़ में दम हो तो कोई परबंध करा दो। चिल्लाने से कुकुर अस कछु थोरोन होत है। गरीब मजदूरन से हमदरदी है तो गरीब बनो पहिले। महल में सोए के गरीबन खातिन रोते हैं... सब दिखावा, इनकरे जईसन साहेब-सुहबान से तो भरसटाचार फईला है। अईसी हमदरदी का काम की? चार पईसा चाह के पटाये के दम नाहीं अऊर देस की पीरा देख य दुबर होये जा रहे हैं ससुरे...।'' दद्दा निष्क्रिय और बौद्धिक जुगाली करने वालों की पोल खोल कर रख देते हैं। मानो कह रहे हों कि, 'जाके पैर न फटे बिवाई सो क्या जाने पीर पराई?

दूसरों की पीड़ा को जानने-समझने और परहित को मनुष्य धर्म मानने के लिए जीवन और विचार के बीच ज़रा भी फांक नहीं होनी चाहिए। जीवन से अलग-थलग होकर विचार बुझे हुए दिए की तरह होता है, वह अंधेरे को ही गाढ़ा और डरावना बनाता है। प्रकाश और ताप के लिए विचारों की आग ज़रूरी है, और विचारों की आग गतिशील जीवन से ही जागती और धधकती है। हर प्रकार की परतंत्रताओं और दुःखों से मुक्ति पाने के लिए जनता और जन संघर्ष से जुड़ना ज़रूरी है। महान् कवि गेटे ने भी कहा था कि, 'कनेक्ट आलवेज़ कनेक्ट।' जोड़ो, हमेशा जोड़ते रहो। दद्दा आमफहम ज़बान में जनता से बौद्धिक वर्ग के अलगाव और दुराव की धज्जियां उड़ा देते हैं। इसी दुराव

जीवन से अलग–थलग होकर विचार बुझे हुए दिए की तरह होता है, वह अंधेरे को ही गाढ़ा और डरावना बनाता है। प्रकाश और ताप के लिए विचारों की आग ज़रूरी है, और विचारों की आग गतिशील जीवन से ही जागती और धधकती है। हर प्रकार की परतंत्रताओं और दुःखों से मुक्ति पाने के लिए जनता और जन संघर्ष से जुड़ना ज़रूरी है।

और जनता से अलगाव का फ़ायदा रूढ़िवादी और अतीतवादी धर्म उठाता है; और धर्म को हथियार बनाकर राजनीति भी अपना चूल्हा जलाती है। जनता की दाल गले न गले लेकिन धर्म और राजनीति की रोटी सिंकती रहे। 'मरे हुए लोग' कहानी का एक पात्र बीरन कहता है कि, ''न जी - घरभरन, हमरन घर कर डऊकी परानी दिन भेर जंगल-पहार मन में जी जान ला खपात रथें, अऊर का लानथें उहां ले? ऐही, लकरी झूरी, अंवरा, सरई, पान, मुखारी! अतना जी जराए के अंवरा ला उबाल के रुपिया किलो बेच-बिखन के नोन-माखुर कर जुगारा अऊर देख अतियाचार की सरकार भूखल-खखाल अपन आदमी मन ला छोड़े रथे।'' सरकार के आदमी ही सेठ, साहूकारों और व्यापारियों से सांठ-गांठ कर जंगल के जंगल काटते हैं और इस अपराध की सजा जंगल के सच्चे रखवालों को देते हैं। गंवइहों और आदिवासियों को बराबर लूटते और सताते हैं। जेलें ऐसे असंख्य निरपराध और निर्दोष लोगों से भरी हुई हैं। करे कौन और भरे कौन?

जंगल दारोगा बीरन को डरा-धमका कर लूटता है। दारू, अंडा और रुपया खाता है और हड़का कर चला जाता है। बीरन अपने दोस्त घरभरन से गुस्से में कहता है कि, ''हमरे बोट देहल सरकार हवे... ओकर आदमी भी हमर होना चाही न। अइसना का कि लूटे लंगारे वाला हमरन कर छाती में कोदो दरें... हमरन से पूछा कोन सहरी जंगल कटवाथे अऊर ओमन कर संगी कोन हवें... सहर कर बड़खा-बड़खा आरा मिल दार मन कर रवन्ना काटो...लाइसेन बनाव...।'' इतने पर ही बीरन नहीं रुकता वह अत्याचारियों को सरापता भी है कि, ''देखबे हराम कर खवइया मन के लरिका-छउवा मन लंगरा, खोरा अऊर कनवा जनमहीं...।''

नेसार नाज़ गांव-जबार के अंधेरों और कोनो-अतरों में रेंगते और डसते विषधरों की पहचान करते हैं और साफ इशारा भी करते हैं। सामाजिक-राजनीतिक बेईमानियों और छल-कपट का गणित भी पाठकों के सामने रख देते हैं। कहन की ख़ूबसूरती और ख़ूबी यह है कि वह अपनी ओर से कोई टिप्पणी नहीं करते। कपट और लूट का सारा खेल कहानी के पात्र ही बयान करते हैं। बीरन अपने अनुभवों से अत्याचारियों को पहचानता है और उन पर पलटवार करने के नुस्ख़े तक भी पहुंचता है। वह अपने आप से कहता है कि, ''घरभरन ठीके गोठियाथे - ए धार सरकार कर आदमी आहीं ता घरभरन से धरवाहूं हमरे गांव वाला मन एक जुटहा होए के कहब - गोरमिन्ट ला इहां बलाओ... तबे तोला छोड़ब। नई तो हमारा ठेपा अऊर बोट फिराए दो अऊर हमारा गांव कर बाहर राज करो। अइसन कहे में का गलती हवे। ओला घेर लेयब ता गौरमिन्ट दार नेता